स्वर्गायतन

हिन्दुस्तानी पत्रिका में
समीक्षार्थ

सत्यदेव मिश्र 'उपेन्द्र'

देव प्रकाशन
०आई०जी०, 3, सर्कुलर रोड, इलाहाबाद
दूरभाष : 420715

प्रकाशक
देव प्रकाशन
इलाहाबाद

❑

मुद्रक
पियरलेस प्रिंटर्स
1, बाई का बाग, इलाहाबाद-211003

❑

संस्करण 1999

❑

मूल्य : रु० 75.00

श्री गुरवेनमः

प्रस्तुति

दृष्टि के माध्यम से देखने का श्रवण के माध्यम से सुनने का, वाणी से कुछ व्यक्त करने का भाव मनुष्य को बारंबार विवश करता है, प्रकृति के सौंदर्य की महिमा तो ऐसा उद्वलित करती हैं कि अन्तर्मन, अंतर्दृष्टि, अंतःश्रवण, द्रष्टा बनकर दिव्य भाव प्राप्त करन लगते हैं और उस भाव के साथ द्रष्टा, दृश्य बन कर बोलने लगता है, जब कि द्रष्टा दृश्य नहीं हो सकता किन्तु यह अलौकिक अभिव्यक्ति, व्यक्ति को कवित्व शक्ति प्रदान करके व्यक्त करने लगती है। इस 'स्वर्गायतन यात्रा' काव्य में जो कुछ दृश्यावलोकन मे प्रेरणा मिली, यह वहाँ की प्रकृति-प्रेरणा है किन्तु उसकी मूल प्रेरणा म हमारे सुहृद बन्धु श्री बजरंग दत्त मिश्र भी एक स्रोत हैं जिन्होंने यात्रा के पहले प्रेरित किया था कि उत्तराखण्ड हिमालय के दर्शन से जो प्रेरणा आपको मिलेगी उसे अपने में ही सीमित न रखियेगा उसे समष्टि को देने का प्रयास कुछ छन्दों में करिएगा। उनका यह संकेत बरदान के रूप में 'स्वर्गायतन' है।

इसमें सुधीजन विद्वज्जन ने अपने मंतव्य लिखकर महान योगदान किया है। डॉ० कन्हैयालाल पाण्डेय पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डिग्री कालेज मीरजापुर, पूज्यवर बजरग दत्त मिश्र, श्री ब्रह्मदेव त्रिपाठी 'ब्रह्मा', मीरजापुर प्रबुद्ध साहित्यकार एवं कवि श्री मोहन अवस्थी इलाहाबाद, डॉ० चन्द्रभानु त्रिपाठी, इलाहाबाद और भी हमारे अनेक प्रेरणास्रोत कविबंधु सर्वश्री रमेशचन्द्र द्विवेदी, दयाशंकर पाण्डेय, करुणेश त्रिपाठी, राजाराम शुक्ल, अरविन्द कुमार मिश्र, माधवेन्द्र, उमाशंकर मिश्र 'बालेन्दु', रामेश्वर प्रसाद केसरवानी आदि ने अपनी-अपनी शुभकामनाएँ दीं।

मैं सभी उपर्युक्त महानुभावों का आभारी हूँ। उन सभी पाठकों का भी आभारी रहूँगा जो स्वर्गायतन का अवलोकन कर स्वर्गीय आनन्द में समाहित होंगे और राष्ट्रीय हित में भी सजग रहेंगे। इस अभिलाषा के साथ जनमानस को स्वर्गायतन समर्पित कर रहा हूँ।

—सत्यदेव मिश्र

शुभाशंसा

(कविवर श्री सत्यदेव मिश्र 'उपेन्द्र' का
अभिनव काव्य स्वर्गायतन)

शिवावासो गौरीशिखर लसितं मानससरः
विराजेते यस्योरसि हरिपदी-सूर्य्यतनये।
विशाले स्तः पुर्यौ हरि-हर नदी-पूतपुलिने
हरिद्वारं द्वारं नगपतिवरोऽसौ विजयते॥

जिसके विशाल परिसर में शिव जी का आवास कैलास तथा गौरीशंकर चोटी से विभूषित मानसरोवर है। जिसके वक्षःस्थल में गंगा तथा यमुना विराजमान हैं। जहाँ पर मन्दाकिनी एवं अलकनन्दा के पवित्र तटों पर भगवान् केदारनाथ तथा बदरीनाथ की पुरियाँ स्थित हैं तथा हरिद्वार (हरद्वार) नामक द्वार ही जिसका प्रवेश द्वार है, उस श्रेष्ठ नगराज हिमालय की जय हो।

देवात्मानं प्रमुखसरितामुद्गमं भूकिरीटम्
दर्श दर्शं कविवरसुधीः सत्यदेवः समन्तात्।
काव्यं स्वर्गायतनमकरोत् शब्दपुष्पोपहारम्
वाचो भूषा कविकृतिरियं स्वर्ग-सौख्यप्रदा स्यात्॥

कविवर सुधी सत्यदेव मिश्र 'उपेन्द्र' जी ने प्रमुख नदियों के उद्गम तथा पृथ्वी के मुकुट देवस्वरूप गिरिराज हिमालय का पूर्णरूप से दर्शन कर शब्द पुष्पों के हार रूप इस स्वर्गायतन काव्य की रचना की है। वाग्देवी के आभूषण की तरह काव्य-गुणों से विलसित यह काव्य (रचयिता एवं पाठक) सभी को स्वर्ग के मिलने वाले सुख यहीं प्रदान करे।

शरत् पूर्णिमा संवत् २०५५

—डॉ० चन्द्रभानु त्रिपाठी
३४, बलरामपुर हाउस
इलाहाबाद २११००२

प्रस्तावना

श्री सत्येदव मिश्र 'उपेन्द्र' का स्वर्गायतन काव्य उत्तराखण्ड के तीर्थो को आठ सोपानों में प्रस्तुत करने का एक काव्यमय प्रशंसनीय प्रयास है। कवि 'उपेन्द्र' के इस काव्य में शारीरिक तीर्थाटन के साथ मानसिक यात्रा भी अंकित हुई है। इस प्रकार देश और काल को समन्वित करने की चेष्टा स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।

यह काव्य हिमालय के वर्णन से प्रारम्भ होता है, जिसमें अध्यात्म और प्रकृति-सौन्दर्य को चित्रित करके कवि ने अपने भाव इस प्रकार अभिव्यक्त किए हैं—

प्रकृति करती सांकेतिक बात,
मनुज जीवन का क्या है श्रेय।
प्रेममय अपलक हिमगिरि देख,
एक मैं तेरा मोहक प्रेय॥
विश्व की शोभा परम पुनीत,
आत्म-दर्पण स्वर्गिक सोपान।

पहाड़ की 'चढ़ाई टिहरी की विस्तीर्ण' के साथ 'धान के क्षेत्र बड़े कमनीय', 'सेब के कुंज परम रमणीय', आदि के वर्णन, दृश्य का पूर्ण चित्र उपस्थित करने में सहायक सिद्ध होते हैं। कवि ने पर्वत और घाटियों में स्थित तीर्थस्थलों के प्रसिद्ध मन्दिरों एव तत्सम्बन्धी पौराणिक कथाओं का उल्लेख करके इस तीर्थ यात्रा को रमणीयतर बना दिया है।

इस काव्य में हरिद्वार, ऋषिकेश, यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीविशाल और मानसरोवर तक की सांस्कृतिक यात्रा का सुख तो मिलता ही है, कवि ने पाठक को वर्तमान परिवेश से जोड़कर उसकी बौद्धिक चेतना को आन्दोलित करने का भी स्तुत्य प्रयास किया है। ऐसा करने में कवि की दृष्टि पर्यावरण के दोनों पक्षों पर रही है। एक ओर तो उसका दल हिमालय की शोभा देखता हुआ आगे बढ़ता है, दूसरी ओर 'कुछ आगे बढ़कर देखा गंगा में बाँध बनाकर विद्युत उत्पादन होता विकसित है जिससे घर-घर और 'दैहिक, दैविक, आध्यात्मिक, हरता त्रिताप गंगाजल, कर रहे प्रदूषित जल को, *स्वार्थान्ध मनुज गण प्रतिपल।*'

स्थान-स्थान पर कवि उपेन्द्र जी ने प्रकृति-सौन्दर्य से प्रेरित होकर काव्यरचना करने वाले सरस्वती-पुत्रों का भी ससम्मान स्मरण किया है। व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, प्रसाद, पंत और दिनकर के प्रति कवि ने अपनी श्रद्धा प्रकट की है। प्रसाद जी के काव्य से वह अत्यधिक प्रभावित हुआ है। इस बात के प्रमाण स्पष्ट रूप से प्राप्त हैं, किन्तु कवि ने छायावादी सौन्दर्य चेतना से प्रभावित होते हुए भी 'स्वर्गायतन' काव्य के द्वारा एक नया मार्ग बनाया है। यह काव्य कविता में लिखा गया यात्रा-वृत्तान्त है। कवि का यह प्रयोग एक नया प्रयोग कहा जायेगा। मैं कवि के इस प्रयास के लिए उसे बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि ऐसी सरल और साधु भाषा में प्रस्तुत की गई इस छन्दबद्ध रचना का हिन्दी जगत् में उचित सम्मान होगा।

9-2-98

—मोहन अवस्थी

अभिमत

प्रस्तुत ग्रंथ-स्वर्गायतन के रचयिता पण्डित सत्यदेव जी मिश्र 'उपेन्द्र' हैं। श्री उपेन्द्र जी की अनेक रचनाएँ पूर्व ही प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें 'मारुति-दर्पण' एक अनूठा महाकाव्य है। उनकी सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि अत्यन्त पैनी है। वे शास्त्र के ज्ञाता ही नहीं अपितु उसके अनुसार जीवन जीने मे विश्वास रखने वाले प्राणी हैं। यही उनकी सर्वाधिक मूल्यवान पूँजी है। परिणाम स्वरूप उनकी रचनाओं में वास्तविक आत्मानुभूतियों के चित्र बन पड़े हैं। संस्कार की इस प्रबलता ने ही उन्हें उत्तराखण्ड की यात्रा के लिए प्रेरित किया। धर्मपत्नी एवं मित्रों के सुखद साहचर्य से उन्होंने इसे संपन्न किया। उनका कवि हृदय भावविभोर हो कुछ कह उठा। फलस्वरूप यह ग्रन्थ अस्तित्व में आया।

जगद्‌गुरु स्वामी शंकराचार्य ने सनातन धर्म के पुनरोद्धार हेतु की गई अपनी दिग्विजय यात्रा के माध्यम से इस विशाल देश में चतुर्दिक चार पीठें स्थापित की थीं। उनका उद्देश्य था कि समग्र देश में अनेकता में भी एकता का भाव अक्षुण्ण रूप से व्याप्त रहे। एक दिशा का भारतवासी कूपमण्डूक न होकर अन्य दिशाओं के लोगों के विचारों, रीति-रिवाजों से सुपरिचित होता रहे। यह परम्परा आज भी ज्यों की त्यों विद्यमान है। कवि की उत्तराखण्ड यात्रा भी इसी कड़ी में है।

प्रस्तुत रचना आठ सोपानों में विभक्त है। इनमें वृहत्तम सोपान 'दर्शन सोपान' तथा लघुतम सोपान 'मानसरोवर' सोपान है। सारी रचना दो सौ पचास छन्दों में सीमित है।

ऐसा प्रतीत होता है कि सर्वप्रथम कवि के मन में रचना को वर्तमान रूप में प्रस्तुत करने का विचार न था। उसने नितांत सहज रूप में अपनी समूची यात्रा का वर्णन एवं विवरण मात्र चौंसठ छन्दों में सम्पन्न कर दिया था पर बाद में उसके मन में विचार आया कि यात्रा के प्रमुख-प्रमुख स्थलों का कुछ और अधिक वर्णन कर इसे वर्तमान रूप मे प्रस्तुत किया जा सकता है। परिणामस्वरूप यह रचना आठ सोपानों में पूर्ण हुई। वैसे देखें तो 'दर्शन' सोपान में ही समग्र यात्रा सम्पन्न होती दिखाई देती है।

रचनाकार श्री 'उपेन्द्र' जी सनातन-संस्कार एवं धर्म के प्राण हैं। उनकी विचारधारा मे राष्ट्रीयता एवं आध्यात्मिकता का अपूर्व संयोग हुआ है। वे देशवासियों का आह्वान

करते हैं और उन्हें देशहित में एक रह कर उसकी रक्षा की तत्परता में कटिबद्ध रहने की प्रेरणा देते हैं। वे कहते हैं—

हिम गिरि से आया एक नाद
हे भारतवासी सजग रहो।
तत्पर सब देश की रक्षा-हित
संगठित भेद से विलग रहो॥ ३३॥ यमुनोत्री सोपान

तुम मेरी रक्षा करना नित
मैं प्रहरी सतत तुम्हारा हूँ।
यह भारत संस्कृति अमर रहे
मैं उसकी शाश्वत धारा हूँ॥ ३४॥ यमुनोत्री सोपान

सीमा के प्रहरियों का अभिनन्दन करते हुए कवि कहता है—

सैनिक अति शीत सहन करके
वैरी से करते हैं रक्षण।
इनका अभिनन्दन करता हूँ
जिनसे भारत रक्षा-अनुरक्षण॥ १९॥ बदरी सोपान

बदरीधाम के सीमा प्रहरियों एवं उनकी व्यवस्था को देखकर वह सहज भाव से कह उठता है—

जाते हैं वायुयान उन तक
साधन सुविधा सुख देने को।
दिव्यास्त्र शक्ति से सजे हुए
सीमा संरक्षा करने को॥ १८॥ बदरी सोपान

कवि का जीवन दर्शन आध्यात्मिक है अस्तु इस रचना में स्थान-स्थान पर इस भाव की परिपुष्टि हुई है—

मुक्ति वैराग्य ज्ञान का द्वार
सत्य आध्यात्मिकता से पूर्ण।
चेतना की जो पावन भूमि
जो कि कर रही मद भ्रम चूर्ण॥ ४॥ दर्शन सोपान

प्रकृति करती सांकेतिक बात
मनुज-जीवन का क्या है श्रेय?
प्रेममय अपलक हिम गिरि देख
एक मैं तेरा मोहक प्रेय॥ ६॥ दर्शन सोपान

प्रकृति का गूढ़ रहस्य उसकी आत्मदृष्टि के साथ ही आध्यात्मिकता का भी बोध कराता है—

प्रकृति का अतिशय गूढ़ रहस्य
दे रहा मन को अंतः तुष्टि।
भर रहा जीवन में सुख शान्ति
बढ़ाता आध्यात्मिक नव पुष्टि॥ ५७॥ दर्शन सोपान

दूरस्थ हिममण्डित शिखर जिन पर पक्षीगण कलरव कर रहे थे तथा तितलियाँ सहज, स्वाभाविक आमोद-प्रमोद में संलग्न थीं, को देखकर भावुक कवि को आनन्दानुभूति हो रही है—

तितलियों का कमनीय विलास
विहग-कलरव सुख शोभा धाम।
हिमाच्छादित थे शिखर सुदूर
दे रहे नयनों को विश्राम॥ १०॥ केदार सोपान

कवि ने जिन तीर्थ-स्थलों के दर्शन किए हैं, उसने उनकी पौराणिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला है। वह अतीत का स्मरण करता हुआ कहता है—

सुनाता हूँ अतीत की बात
श्वेत नृप का तप देख महान।
कहा ब्रह्मा ने माँगो वत्स
तुम्हें दूँ मुँह-माँगा वरदान॥ २॥ हरिद्वार सोपान

प्रभो यह मायावती पुनीत
बने गंगा का द्वार महान।
द्वार यह हरिहर का सुप्रसिद्ध
करे सेवन से मुक्ति प्रदान॥ ३॥ हरिद्वार सोपान

ऋषिकेश के वर्णन में कवि अनेक पुराण-पुरुषों का चिन्तन करता हुआ कहता है—

यहीं बलिसुत बाणासुर स्थान
यहीं है परशुराम का वास।
यहीं नचिकेता पावन भूमि
बालखिल्यों का यहीं निवास॥ २२॥ ऋषिकेश सोपान

केदारनाथ पहुँचते ही उसे इतिहास-पुरुष-कृष्ण एवं पाण्डवों का ध्यान आता है और वह कहता है—

कृष्ण का आया मनमें ध्यान
पाण्डवों का पावन प्रस्थान।
यहीं पर सकल हुए निष्पाप
प्राप्त कर शंकर से वरदान॥ १३ केदार सोपान

केदारनाथ में कवि भक्ति-भाव से ओत-प्रोत हो कल्याणी शिवा से निरन्तर सत्पथ पर चलते रहने की प्रेरणा देने की याचना करता है। वह कहता है—

शिवा कल्याणी पद नख ज्योति
हृदय में भर दे अविरल भक्ति।
समुद सत्पथ पर रहूँ सदैव
अचल दे माँ मुझ में वह शक्ति॥ २२॥ केदार सोपान

बदरी विशाल तीर्थ-स्थल का वर्णन करते हुए कवि कहता है—

उपनगर मनोरम लसित रम्य
बदरी विशाल का पावन थल।
शुचि ब्रह्म कपाल प्रपात कुण्ड
महिमा मण्डित अति निर्मल जल॥ १३॥ बदरी सोपान

मन्दिर में विराजमान देवमूर्तियों का अति सजीव चित्रण कवि ने किया है। इसके पाठमात्र से मन्दिर एवं उसमें विराजमान देवों की स्पष्ट झाँकी पाठक के मन पर अनायास ही अंकित हो जाती है—

प्रभु बैठे हैं पद्मासन में
बहु दिव्याभरणों से शोभित।
अनुपम हीरक अवतंस लसित
शोभा विलोक था मन लोभित॥ १५॥ बदरी सोपान

नर-नारायण-उद्धव-कुबेर
देवर्षि खड़े वीणा लेकर।
हनुमान-गणेश-महालक्ष्मी
बाहर परिक्रमा में सुन्दर॥ १६॥ बदरी सोपान

यमुनोत्री में पहुँचते ही कवि इतना भावविभोर हो उठता है कि उसकी अन्तश्चेतना में गिरिवर मूर्तिमान हो उठता है। उसे लगता है कि गिरिवर उसे यमुना-चरित-गान की प्रेरणा दे रहा है और पूछ रहा है कि यह यमुना मेरे घर क्यों आई?—

बोले गिरीन्द्र गाओ कवीन्द्र
रवितनया-चरित पुनीत प्रथम।
क्यों आई यमुना मेरे गृह?
करने क्रीड़ा अपनी अनुपम॥ १॥ यमुनोत्री सोपान

इसी भाव धारा में निमग्न कवि गिरीन्द्र की जिज्ञासा का समाधान करता हुआ कहता है —

मैं बोल उठा हे अपरिमेय!
तेरी महिमा का अमर गीत।
गाते हैं अमर सनातन से
तुम नित नवीन अतिशय पुनीत॥ २ ॥ यमुनोत्री सोपान

यह यमुना जंबू द्वीप रही
जामुन के रस की बन धारा।
तपकर रवि तनया बन आई
पाने को कृष्ण चरण प्यारा॥ ३ ॥ यमुनोत्री सोपान

इसी प्रकार का भाव मानसरोवर सोपान के प्रथम तीन छन्दों में अभिव्यक्त हुआ है वहाँ भी कवि ने हिमगिरि को मूर्तिमान कर उससे कहलवाया है—

हिमगिरि बोला चढ़कर देखो
मेरे उर का यह मानस सर।
जग को आमंत्रित करता है
देखो मेरा कैलास शिखर॥ १ ॥ मानसरोवर सोपान

मरकत छाया गिरि प्रांगण में
भगवत–रस के प्रिय अभिलाषी
मानस को नवजीवन देने
आओ कवि साधक संन्यासी॥ ३ ॥ मानसरोवर सोपान

गिरि–सोपानों पर उतर विचर
अनुभव कर लो आकर गिरि में।
छू मेरा अंतर्ज्योति शिखर
आनन्द रस उज्ज्वल सरि में॥ ३ ॥ मानसरोवर सोपान

कवि ने परस्पर विरोधाभासी चित्रों को भी बड़ी कुशलता से एक ही कड़ी मे पिरान में सफलता प्राप्त की है। एक ओर तो अनूठा प्राकृतिक सौन्दर्य है जिसे देख तन–बदन की सुध नहीं रह जाती और दूसरी ओर गहरी खड्ड मृत्यु का संदेश देती दिखाई देती है। इन परिस्थितियों में भी यात्रीदल अपनी संकल्प शक्ति के सहारे निर्भय हो गतव्य की ओर अग्रसर हो रहा है—

सौंदर्य–छटामृत एक ओर
झाँकती मृत्यु दूसरी ओर।

शोभा विलोकते पथिक वृन्द
पकड़े निर्भयता-बसन-छोर ॥ ७ ॥ यमुनोत्री सोपान

कवि वर्तमान में जीता हुआ भविष्य की कल्पना करता है। वह लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर ही लेखनी उठाता है। उसका उद्देश्य होता है विकृतियों का दिग्दर्शन करा उनके शमन का मार्ग प्रशस्त करना। स्वर्गायतन के रचनाकार को भी इस दायित्व का सम्यक् बोध है। चतुर्दिक हो रहे विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से प्रभावित हो स्थान-स्थान पर अपने उद्गार प्रकट करता हुआ कहता है—

दैहिक-दैविक-आध्यात्मिक
हरता-त्रिताप गंगाजल।
कर रहे प्रदूषित जल को
स्वार्थांध मनुजगण प्रतिपल ॥ ४ ॥ गंगोत्री सोपान

पर गंगाजल क्या बोले?
धरणी पर्वत क्या बोलें।
इनमें तो सहज क्षमा है
मानव रस में विष घोले ॥ ५ ॥ गंगोत्री सोपान

भाषा सहज एवं सरल होते हुए भी संस्कृत निष्ठ है। भावों के अनुसार ही उसने अपना सहज एवं स्वभाविक रूप प्राप्त कर लिया है। शब्द चयन बहुत सुन्दर है जो कि अनेक अर्थों में 'प्रसाद' एवं 'पंत' से मिलता-जुलता है। समग्र रचना प्रसादगुण पूर्ण है—

बसुधा सुहाग बन आई
बन गई त्रिपथगा सुरसरि।
तीनों लोकों का हितकर
महिमा झरने सुर हरिहर ॥ २८ ॥ गंगोत्री सोपान

उत्तराचल स्थित देवतीर्थों के दर्शन की प्रबल लालसा जगाने वाला यह काव्य अनुपम है। यात्रा में जाने वालों के लिए बहुत कुछ अंशों में यह ग्रंथ प्रकाश स्तम्भ का कार्य करेगा और जो लोग यात्रा सम्पन्न कर चुके हैं उनके लिए यह उनकी मूल्यवान स्मृतियों को सुरक्षित रखने में सहायक होगा।

विश्वास है कि इस लोक-कल्याणीकारी ग्रंथ से अधिकाधिक लोग लाभान्वित होंगे।

—बजरंग दत्त मिश्र
113, बलरामपुर हाउस
इलाहाबाद

मंगलाशंसा

डा० श्री कन्हैयालाल पाण्डेय

श्री सत्यदेव मिश्र 'उपेन्द्र' अपने पारिवारिक सांस्कृतिक आदर्श को अपनाने वाले कवि-हृदय उदात्त चरित्र एवं सज्जन पुरुष हैं। आज के मध्य वित्तीय कृषक-समाज मे सन्ताष, कृषि तथा बौद्धिक परिकल्पों से संपन्न व्यक्ति हैं।

आप विवेकशील हैं। सनातन अतीत को आज के प्रगतिशील युग में प्रसन्नता से अपनाते हुए क्रियाशील रहते हैं। युगों से लक्ष्मी सरस्वती कृषि तथा सामाजिक प्रतिष्ठा की सरस त्रिवेणी में अवगाहन करने वाले परिवार में पलने वाले श्री मिश्र जी लोकप्रिय तथा श्रद्धास्पद हैं।

बाल्यकाल से ही कवित्व बीज का संस्कार है। किशोरावस्था के परिणत काल से आपने मारुति दर्पण नामक परिमार्जित प्रबन्ध काव्य लिख डाला है। उसका काव्य-मर्म मलिन अन्त:करण को निर्मल बनाने वाला है। यह महाकाव्य अपनी धरती का स्वत· प्ररणा-प्रसूत, मूल्यवान, जीवन-मर्जन है। यह भारतीय जीवन-मूल्य का काव्य है। कालान्तर में आपने धारा नामक काव्य की पाण्डुलिपि भी दिखलायी थी, जिसका कथानक पौराणिक सन्दर्भों को आधुनिक प्रासंगिकता देने वाला प्रगीतात्मक धरातल पर रूपायित किया गया था।

श्री उपेन्द्र जी ने अभी उत्तर भारत के पावन तीर्थों का भ्रमण किया है। इस भ्रमण मे धार्मिक परम्पराओं का पालन मात्र नहीं किया है बल्कि उनके तीर्थाटन में आर्य-पथ का दायित्व-बोध है। इस तीर्थाटन से सन्दर्भित उनका काव्य स्वर्गायतन है। इसमें सर्वदा से आचरित होने वाला सांस्कृतिक यात्रा-वृन है। अत: इसमें कथ्य का नयापन नहीं है फिर भी कवि की दृष्टि में स्थान-स्थान पर मधुमास की तरु वीथियों का नयापन है। हिमालय की यात्रा में बार-बार झाँककर सन्देश को देखने की निष्ठा है।

आज की सर्वहितकारिणी भागीरथी गंगा कलुषित है, अकृत खतरा लेकर कालियानाग को पलायित कर पुण्यतोया बनी हुई कृष्णा की यमानुजा यमुना आज फिर यमानुगामिनी बनती जा रही है—इन दोनों देव नदियों का पर्यावरण जल शुद्ध करने का सकेत देने वाला कवि अतीत के पटल पर वर्तमान को सात्विक बना रहा है। कालिदास के देवतात्मा हिमलाय को थहाने का प्रयास स्वर्गायतन के कवि ने खूब किया है। अत·

इसमें शिल्प का कसाव नहीं है, फिर भी विशुद्ध-सत्यबोध का, धरती और आसमान को जोड़ने वाला सनातन मन का कसाव विद्यमान है। जानदार भाषा का चित्रांकन न होकर भी अध्यात्म जीवन की पुन:-पुन: जानदार प्रस्तुति है।

मानवीय प्रेरणा है, इस काव्य में मानव एवं प्रकृति का समन्वय है। भारतीय कर्तव्य बोध एवं राष्ट्रीय अस्मिता है। जन-जन के हित-चिन्तन की काव्य प्रयोजना है। विकलांग पर्यावरण की समीक्षा द्वारा पर्यावरण की सर्वांग परिरक्षा का भाव हैं और हैं शतदल की तरह पर्त दर पर्त भारतीय मनीषा का पुन: पुन: प्रत्यांकन।

कवि ने लक्ष्य किया हैं कि इस धरती पर स्वर्णकोश-रूप पर्वतादि हैं। जो नदी निर्झर खनिज वनस्पत्ति आदि सभी संपदायें देते हैं। राष्ट्रीय इनका दर्शन है, इनका संरक्षण राष्ट्रीय है—तीर्थाटन भारतीयता का पर्याय है।

कवि ने हिमालय यात्रा में अपने कवियों बाल्मीकि, कालिदास, प्रसाद, सुमित्रानन्दन पन्त एवं दिनकर को स्मरण किया है क्योंकि इन प्रतिनिधि कवियों ने पर्वतीय भ्रमण में अपनी आचार संहिता का व्यंजना-कौशल दिखाया है। यह काव्यानुरागी मिश्र जी का भाव है। कहीं-कहीं पर तो कवि ने अपने वर्णन में प्रसाद जी की काव्यमयी वस्तु चेतना के जीवन्त बिम्ब का आकलन किया है। हिमालय के प्राण-मय बिम्ब विधान का यह कैसा प्रीतिकर स्मरण है—

देखकर होते सभी अवाक्, धरा को यह सिकुड़न भयभीत।
गगन भेदी हिमगिरि के श्रृंग, प्रकृति सौन्दर्य बढ़ाते प्रीत॥

कवि अपनी प्रौढ़ आयु के अन्तरण एवं मूर्धन्य आयु के आरोहण पर यह यात्रा काव्य लिख रहा है अत: उसके सांकेतिक दर्शनों में ब्रह्मविद्या, श्राद्ध एवं सनातन मूल्यों की चर्चा पर्याप्त है।

कवि ने यथास्थान राष्ट्रीय भाव धारा एवं सीमा सुरक्षा का भी संकीर्तन किया है। इस राष्ट्रीय चिन्तन को उसने इस देश के लिए सजग चिन्मय रूप दिया है।

हिमगिरि से आया एक नाद
हे, भारतवासी सजग रहो!
तत्पर स्वदेश की रक्षा-हित
संगठित, भेद से विलग रहो!!

तुम मेरी रक्षा करना नित
मैं प्रहरी सतत तुम्हारा हूँ।
यह भारत-संस्कृति अमर रहे।
मैं उसकी शाश्वत धारा हूँ॥

कवि बार-बार गंगा-गरिमा एवं उसकी प्राकृतिक सुषमा से उसकी सर्वहितकारिणी निरन्तरता से आप्लावित है। बदरीनाथ, केदारनाथ को, गंगोत्री, यमुनोत्री को, हरिद्वार-

ऋषिकेश को चिरन्तन सार्वकालिक भारताय जीवन की स्वरसवाही प्राणवान् आत्मवान् शाश्वत धरोहर मानता है।

मानसरोवर सोपान का वर्णन करता हुआ कवि वृहत्तर भारत की याद करता है। मानसरोवर हमारे व्यापक भारतीय बन्धुत्व का अविरल सोपान है। जिसमें वह भारत की समष्टि मूलक बन्धुत्व का, बौद्ध, तिब्बती और हिन्दुत्व की एकात्मकता का प्रत्यकन करता है। वह अपने मानसरोवर को अखण्ड भारत का पैतृकदाय मानता है।

बन्धु पथ दुर्गम पथ चढ़ते, हिमगिरि का देख सघन कान्तर।
वे बौद्ध तिब्बती हिन्दूजन, पूजा करते कैलास-शिखर॥

इस निवेदन के साथ में—अपने मिश्र जी को साधुवाद देता हूँ, उनके दीर्घायु की कल्याणी अभिलाषा करता हूँ। साथ ही—स्वर्गायतन काव्य की परिवीक्षा द्वारा मिश्र जी की मैं मंगलांशसा करता हूँ तथा सहृदय समाज के गुणग्राही हाथों में इस कृति के अपनाव की कामना करता हूँ।

डॉ० कन्हैया लाल पाण्डेय
अवकाश प्राप्त रीडर
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
के० बी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मीरजापुर

कविर्मनीषी

प्रतिभा ने जिनका वरण किया
विद्वद्-वंशज आचार-केन्द्र।
नैसर्गिक प्राप्त-प्रवृत्ति सहज
परिस्तुत्य महाकवि श्री उपेन्द्र॥

हीरकाक्रान्त शिखरों वाला
जिसकी विराट वैभव शाला।
शोभा-समृद्ध सरि-सर-प्रपात
लसती मंजुल खगमृग-माला॥

जो वैदिक विद्वज्जन-वरेण्य
शुचि सरस सिद्ध-साधक-शरण्य।
अद्‌भुत अधीत्यका-उपत्यका—
शृंखला-सज्ज जिसके अरण्य॥

वह ब्राह्मी कौशल-कला-केन्द्र
संसार-हार का नग नगेन्द्र।
क्या हृदय खोलकर विहंस रहा!
संश्लाघ्य महाकवि श्री उपेन्द्र॥

स्नेहार्द्र-ब्रह्मदेव
बबुरा
मार्गकृष्णा एकादशी
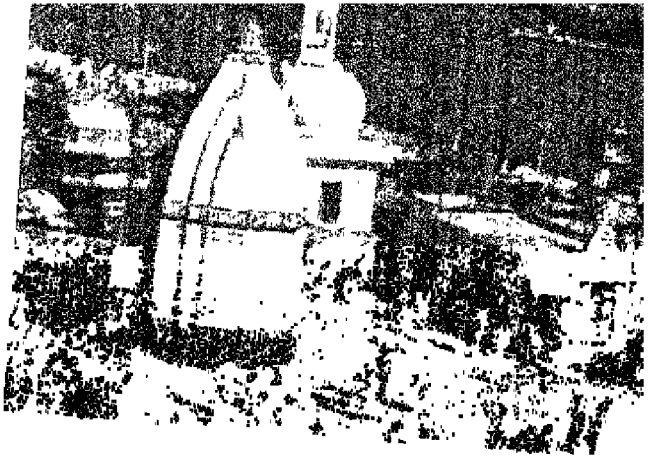
हर की पैड़ी, हरिद्वार
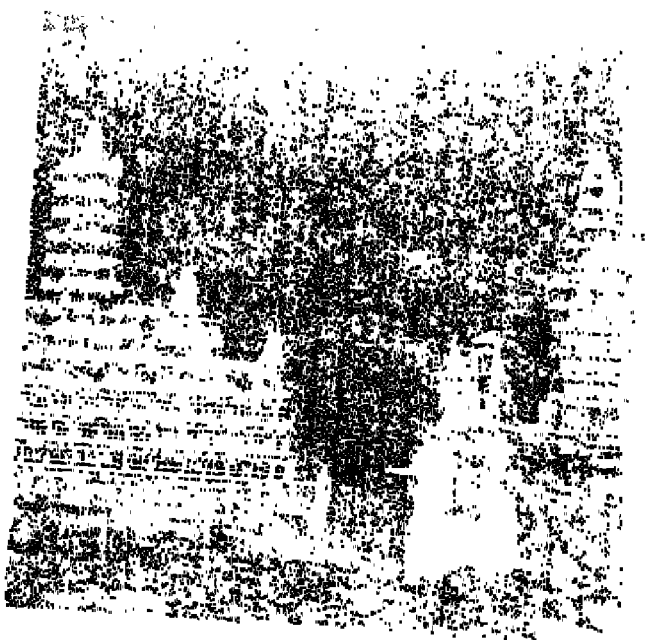
लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश
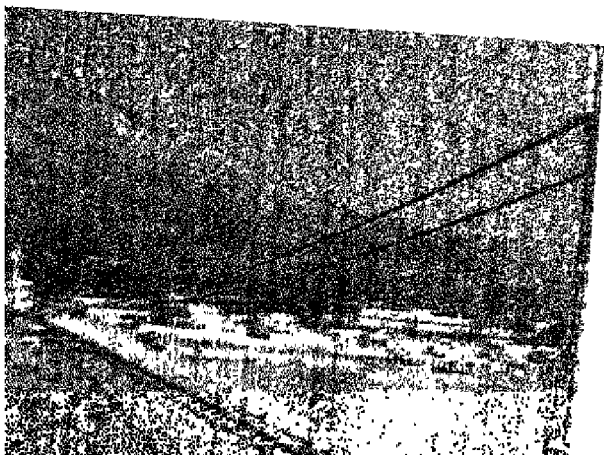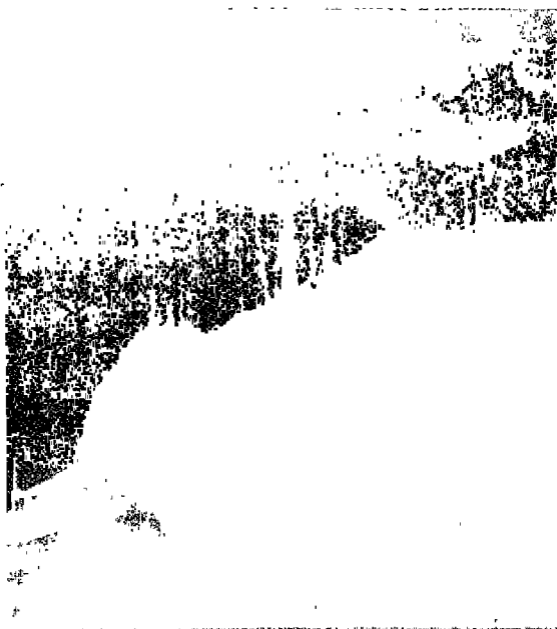
गोमुख
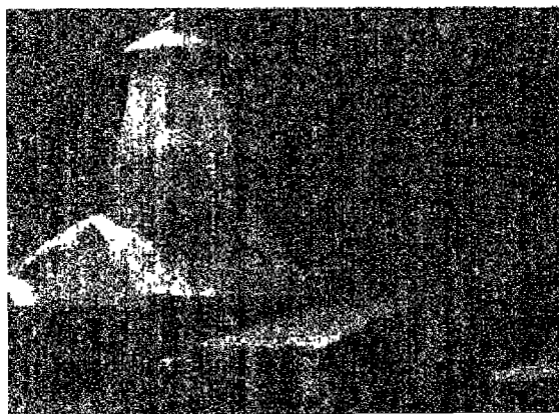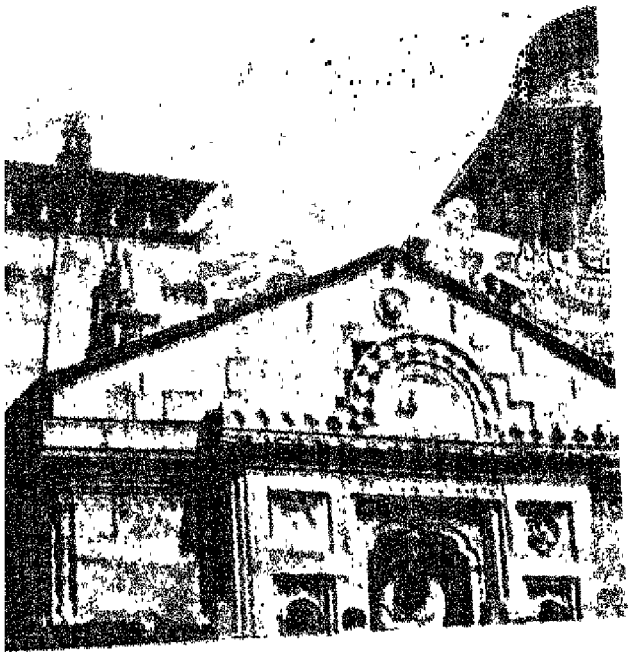
केदारनाथ मन्दिर

केदारनाथ आरती दर्शन

बद्रीनाथ पुरी तथा मन्दिर
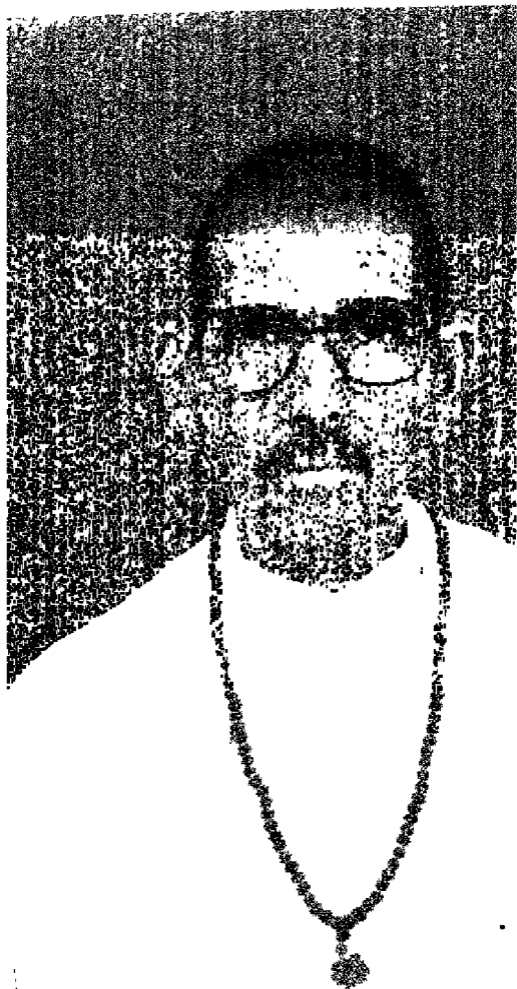
सत्यदेव मिश्र 'उपेन्द्र'

कवि-परिचय

प्रस्तुत पुस्तक 'स्वर्गायतन' के रचयिता पंडित सत्यदेव मिश्र का जन्म संवत १९८९ फाल्गुन पूर्णिमा को मीरजापुर जनपद के ग्राम नेवढ़िया (मझरा) में हुआ है। इनका परिवार ब्राह्मणोचित संस्कारों से परिपूर्ण साहित्य सेवी रहा है। इनके पिता स्वर्गीय पंडित रघुनन्दन मिश्र तथा माता स्वर्गीया श्रीमती रामप्यारी देवी हैं। श्री मिश्र जब मात्र डेढ़ वर्ष के थे तभी इनके पिता का स्वर्गवास हो गया तथा इनके विवाह के पूर्व ही माता की स्नेहमयी छत्रछाया सिर से उठ गई थी। इनका लालन-पालन तथा शिक्षा-दीक्षा इनके बड़े पिता पंडित भगवती प्रसाद मिश्र द्वारा सम्पन्न हुई।

श्री मिश्र की प्रथम रचना बालनाथ चालीसा प्रकाशित हुई तत्पश्चात् प्रसिद्ध महाकाव्य मारुति दर्पण लिखा गया जो कि इनके इष्ट श्री हनुमान जी की कृपा से किशोरावस्था में ही सम्पन्न हो गया था किन्तु इसका प्रकाशन बाद में हुआ। रत्नावली खण्ड काव्य इनकी नवीन कल्पनाओं एवं विचारों की एक सुन्दर कृति है। लोकनन्दिनी इनका अप्रकाशित खण्ड काव्य है।

उत्तराखण्ड की तीर्थयात्रा के प्रतिफल स्वरूप रचित यह 'स्वर्गायतन' काव्य जो कि प्राकृतिक संपदा को अपने में संजोये हुए आध्यात्मिक एवं राष्ट्रीय विचारों को अनावृत्त कर रहा है, एक सुन्दर खण्ड काव्य है। इसका प्रकाशन इनके सुयोग्य एवं पितृभक्त पुत्र श्री ब्रजेश चन्द्र मिश्र सुरुचिपूर्ण ढंग से करवा रहे हैं।

3 मई 1997 को अचानक हृदयगति रुक जाने के कारण प्रयाग के एक नर्सिंग होम में निधन हो गया।

अनुक्रमणिका

❑

दर्शन सोपान

हिमालय भारत-भाल-किरीट,
महामहिमाशाली शैलेश।
भव्य नैसर्गिक सुषमा-केन्द्र,
अपावनता का स्पर्श न लेश॥ १॥

निर्जरों का यह दिव्यावास
जहाँ पाण्डव थे गये सदार।
महाभारत का कर संग्राम
दृगों में भरे हुए जलधार॥ २॥

जहाँ रमते हैं साधक-सिद्ध
प्राप्त करते हैं ब्रह्मानन्द।
विविध योगी-आराधकवृन्द
महाकवि पाने को आनन्द॥ ३॥

मुक्ति-वैराग्य-ज्ञान का द्वार
सत्य आध्यात्मिकता से पूर्ण।
चेतना की जो पावन भूमि
कर रही जो कि मदभ्रम चूर्ण॥ ४॥

सुभग नव सोपानों से युक्त
अहा! यह स्वर्गायतन नगेश।
भव्य नैसर्गिक सुषमा-केन्द्र
प्रशंसक जिसके देश अशेष॥ ५॥

प्रकृति करती सांकेतिक बात
मनुज-जीवन का क्या है श्रेय?
प्रेममय अपलक हिमगिरि देख
एक मैं तेरा मोहक प्रेय॥ ६॥

श्रृंग करते अतीत-स्मृति दान
विहग गाते जीवन-संगीत।
जहाँ बर्बरता होती शान्त
सुषमा कलक्रीड़ा मधुमय प्रीति॥ ७॥

जहाँ भवमुक्ति आत्म-संबोध
भटकते मन को मिलती शान्ति।
आर्य संस्कृति का यह सोपान
दूर कर देता जो भव-भ्रान्ति॥ ८॥

विगत कर बासठ वर्ष पुनीत
निरखने चला त्रिदिव-सोपान।
जहाँ अन्तर्मन पाता शान्ति
वहीं यह हिमगिरि रम्य महान॥ ९॥

विश्व की शोभा परम पुनीत
आत्म-दर्पण स्वर्गिक सोपान।
शुभ्र निर्झर-शोभा कमनीय
नहाता हिमगिरि जहाँ महान॥ १०॥

देखने चला हिमालय आज
लिये मन में श्रद्धा-विश्वास।
सनातनता की पावन ज्योति
हृदय में भरती थी उल्लास॥ ११॥

वही केदार नाथ का धाम
वही बद्री विशाल हरि-रूप।
वही गंगोत्री यमुना द्वार
जहाँ हिमगिरि की छटा अनूप॥ १२॥

मार्ग में मिला प्रथम हरिद्वार
जहाँ पर मनसा देवी-धाम।
शिखर पर जिसकी शोभा-ज्योति
दे रही नयनों को विश्राम॥ १३॥

शिखर-तट बसा हुआ हरिद्वार
बड़ा रमणीक नगर अभिराम।
सामने हरि की पौड़ी मंजु
जहाँ गंगा सुख-शोभा धाम॥ १४॥

बह रही देवपगा पुनीत
हृदय-हिल्लोलित लहर नवीन।
दूसरी धार बह रही दूर
निकट पर्वत के अति प्राचीन॥ १५॥

हरि पैड़ी के घाट मनोज्ञ
मध्य में बना सेतु रमणीय।
देखकर वह नूतन सौन्दर्य
स्वर्ग यह भू पर अति कमनीय॥ १६॥

वृहद् बहु मन्दिर बने अनूप
अपरिमित वैभव का विस्तार।
प्रकृति की गोदी में भू-स्वर्ग
विलसता अनुपम गंगाद्वार॥ १७॥

बढ़ा मैं ऋषीकेश की ओर
जहाँ सुरसरि की छटा अनूप।
हिमालय सुषमा-शोभा धाम
भुवन-शिखरों का है यह भूप॥ १८॥

हृदय हिल्लोलित अति आनन्द
प्रकृति का यह अद्‌भुत शृंगार।
बनाली-शिखर शिवा शिव-रूप
खड़ा शोभा का ले विस्तार॥ १९॥

बहाती नग-तल से अविराम
देवसरि मुक्ता-हीरक हार।
निरख कर होता मुनि-मन मुग्ध
किया निज पावन थल विस्तार॥ २०॥

चढ़ाई टिहरी की विस्तीर्ण
विविध गिरिसानु धरा के भव्य।
उड़ रहे पावन शोभा-केतु
स्वर्ग-सम्मोहन सौष्ठव नव्य॥ २१॥

धान के क्षेत्र बड़े कमनीय
शिखर तक नील-रतन-सोपान।
कलाविद जैसे हो उत्तीर्ण
सजाकर सरस कला-संस्थान॥ २२॥

सेब के कुंज परम रमणीय
दे रहे अपना दिव्य प्रसाद।
प्रसाधन पथ में बने अनेक
सुलभ था नींबू-खीरा स्वाद॥ २३॥

१२६३५

देखकर गिरि की सुषमा मंजु
पिपासा-सुधा स्वयं थी शान्त।
सहस्त्रों शिखर-सुसज्जित सौम्य
महा मोहक तुहिनाचल प्रान्त॥ २४॥

देख उत्तर-काशी कमनीय
चतुर्दिक पर्वत-छटा अनूप।
जहाँ गीता स्वामी का धाम
शिवालय अनुपम कलास्वरूप॥ २५॥

सामने बहती सुरसरि-धार
सुमंजुल घाट नगर अति भव्य।
पर्वतों की गोदी में हरित
सालि खेतों की शोभा नव्य॥ २६॥

जहाँ सन्तों का प्रमुख निवास
हिमालय का आध्यात्मिक केन्द्र।
यही है उत्तर काशी दिव्य
ज्ञान गरिमा के सन्त-महेन्द्र॥ २७॥

हिमालय गन्धर्वों का देश
यहीं सुविराजित देव-समाज।
जहाँ के नर-नारी गौरांग
सहज लगता है सुन्दर साज॥ २८॥

देखकर गिरि-द्रोणी में मेघ
सहज उर होता भावविभोर।
शिखर से बहती हीरक-हार
कलस्वर श्रुति गोचर सब ओर॥ २९॥

रम्य स्वर्गिक गिरि-माला देख
उषा शृंगों पर करती लास।
बरसती सम्मोहन रवि-रश्मि
चाँदनी करती मृदुल विलास॥ ३० ॥

सानु-गरिमा समाधि में मग्न
गगन चुम्बन करता अभिराम।
घाटियों का सौन्दर्य अपार
प्रकृति प्रांगण में शोभाधाम॥ ३१ ॥

वनस्पति सुषमा-सिन्धु अपार
विविध रंगों में अति कमनीय।
मृदुल मांसल यौवन परिपूर्ण
विहग-रव से प्रसन्न महनीय॥ ३२ ॥

हिमालय शुभ्र प्रकृति-सिरमौर
गगन मण्डल तक जो विस्तीर्ण।
लपेटे प्रकृति-छटाली-वस्त्र
मुग्ध नयनों को करे विकीर्ण॥ ३३ ॥

बैठ हनुमत्-चट्टी हनुमान
कर रहे निज-गुरु रवि का ध्यान।
बढ़ाने राम-चरण में स्नेह
विवर्धित राम-ब्रह्म का ज्ञान॥ ३४ ॥

तरणिजा-पास अग्निमय कुण्ड
पके तण्डुल जिसमें तत्काल।
स्वयं दिनकर ने दे निज अंश
किया यमुना को अधिक निहाल॥ ३५ ॥

शिवा-शिवमय सौन्दर्य सुरम्य
शिखर के उच्च उरोज मनोज्ञ।
लपेटे प्रकृति, पुरुष कमनीय
हिमालय प्रतिभासित अति योग्य॥ ३६॥

महीध्रों की द्रोणी में मुग्ध
अलकनन्दा भरती आनन्द।
प्रखरगति मन्दाकिनी प्रवाह
कहीं गंगा-यमुना सानन्द॥ ३७॥

शैलजा-धारा बनीं अनेक
दे रही गंगा का ही बोध।
यही गिरिजा का पावन गेह
इसी में सुर-मुनि करते शोध॥ ३८॥

हिमालय की शोभा कमनीय
देवकवि वाल्मीकि मुनि व्यास
आदि कवि चर्चित है बहु भाँति
शिवा-शिव का यह है उच्छवास॥ ३९॥

जिसे लख कालिदास थे मुग्ध
विपश्चित होते भाव विभोर।
प्रसाद की कामायनी मनोज्ञ
यहीं श्रद्धा के मनु चितचोर॥ ४०॥

सुमित्रानन्दन पन्त विमुग्ध
सूक्ष्म वर्णन करते कमनीय।
धरा पर आकर्षण का केन्द्र
हिमालय है अतिशय महनीय॥ ४१॥

रचा दिनकर ने मंजुल छन्द
हमारे भारत का शिरमौर।
गगन-चुम्बित विशाल शैलेश
सृष्टि की सुन्दरता का ठौर॥ ४२ ॥

जहाँ श्री शंकर-उमा-विवाह
वहीं पर अग्निकुण्ड है प्राप्त।
जल रही वह अनादि से वह्नि
साक्ष्य बन महादेव त्रिदशाप्त॥ ४३ ॥

यहाँ के सुन्दर पशु-खग वृन्द
प्रवाहित होता मलय-समीर।
यही है वसुधा का दिविलोक
शिखर सुर बैठे दिव्य शरीर॥ ४४ ॥

यहाँ कैलास पुण्य का धाम
यहीं श्री नीलकंठ-गिरि श्रृंग।
वाष्प के नव सम्मोहन मेघ
यहीं पर उड़ते स्वर्णिम भृंग॥ ४५ ॥

विहंगमगण का कलरव गान
सुरभि झींसी ढलते हैं मेघ।
विविध रंगों के पुष्पित पुष्प
यहीं है सुषमा का पुण्यौघ॥ ४६ ॥

देख कर होते सभी अवाक्
धरा की यह सिकुड़न भयभीत।
गगन वेधी हिमगिरि के श्रृंग
प्रकृति सौन्दर्य बढ़ाते प्रीति॥ ४७ ॥

खड़े हैं देवदारु कमनीय
सुकोमल मृदुल रम्य सुकुमार।
विविध वल्लरियों से महनीय
वर्चवासों का है विस्तार॥ ४८॥

गुफायें सन्तों की अति गुप्त
योगि-समुदय का यह शुभ धाम।
पर्यटक भक्तों का छवि-गेह
रम्य निर्झर प्रपात अविराम॥ ४९॥

हिमालय बहे हिमानी धार
रजत-हीरक-मुक्ता अविराम।
तुषारों को बरसाते अभ्र
घटा घाटी में शोभा धाम॥ ५०॥

महाकाली-गौरी का क्षेत्र
भगवती सरस्वती-रस धार।
ग्राम-उपनगर-उटज के बीच
शिखर तक मानव का विस्तार॥ ५१॥

दिव्य हरिताभा का आनन्द
सुशीतल सुरभित मन्द बयार।
प्राप्त कर हो जाता मन मुग्ध
प्रकृति से होता नूतन प्यार॥ ५२॥

हिमालय तीर्थों का है तीर्थ
अपरिमित पावन शोभा-धाम।
दिव्य भारत भू का अवतंस
प्रवहमाना गंगा अविराम॥ ५३॥

जहाँ पर मिलते पंच-प्रयाग
पंच काशी प्राकृत रमणीय।
अनेकों तीर्थ-पुण्य का क्षेत्र
परम अनुपम हिमनग महनीय॥ ५४॥

सुदृढ़ सीमा रक्षक अविराम
बहाता अमृतमयी रसधार।
विपुल गंगाओं का नवरूप
विविध सरितायें करतीं प्यार॥ ५५॥

शिखरगण में हरिताभा मंजु
फैल पद तक कर रही विहार।
किये आलिंगन तन्मय मुग्ध
देवतरु यौवन-सा विस्तार॥ ५६॥

प्रकृति का अतिशय गूढ़ रहस्य
दे रहा मनको अन्त:-तुष्टि।
भर रहा जीवन में सुख-शान्ति
बढ़ाता आध्यात्मिक नव पुष्टि॥ ५७॥

कर विमल गौरी कुण्ड-स्नान
रखे उर में श्रद्धा-विश्वास।
लिये दारा-मित्रों का साथ
गया केदारनाथ के पास॥ ५८॥

पाण्डवों का मन्दिर अवलोक
याद आया वह द्वापर-काल।
पुनः कर शांकरमठ-शुभदर्श
हो उठा अन्त:करण निहाल॥ ५९॥

देख स्वर्गिक सम्मोहन मंजु
उषा का शृंगों पर सुविलास।
विपुल रवि-किरणें स्वर्ण बिखेर
प्रकृति का करतीं शुभ्र विकास॥ ६० ॥

बैगनी फालसयी अरुणाभ
हरित-पीताभ-रजत बहुरंग।
तुषारों की अलकें अविराम
शिखर में भरतीं नवल उमंग॥ ६१ ॥

पर्वतों की घाटी अति रम्य
जहाँ मरकत मणि-आभा-पूर्ण।
हरित छाया में करे विहार
उड़ाती अपना कुंकुम-चूर्ण॥ ६२ ॥

सुखद कर तप्तकुण्ड में स्नान
भक्ति-युत किया पिण्ड का दान।
शास्त्र-वर्णित यह ब्रह्मकपाल
करे पितरों को मुक्ति प्रदान॥ ६३ ॥

देखकर नर-नारायण-मेरु
विशद बद्रीविशाल-शृंगार।
मुकट में लसती हीरक-ज्योति
जहाँ की शोभा-प्रभा अपार॥ ६४ ॥

॥ दर्शन सोपान सम्पन्न ॥

हरिद्वार सोपान

पुरी वैकुण्ठ जहाँ मणिद्वार
वहीं शोभा होती साकार।
परम रमणीय शिवालिक शैल
जिसे कहते हैं हरि का द्वार॥ १॥

सुनाता हूँ अतीत की बात
श्वेत नृप का तप देख महान।
कहा ब्रह्मा ने माँगों वत्स!
तुम्हें दूँ मुँह-माँगा वरदान॥ २॥

प्रभो! यह मायावती पुनीत
बने गंगा का द्वार महान।
द्वार यह हरिहर का सुप्रसिद्ध
करे सेवन से मुक्ति-प्रदान॥ ३॥

बनाकर ब्रह्मकुण्ड तत्काल
त्रिदेवों से सम्पन्न महान।
बनी यह मायावती पवित्र
परम रमणीय सुखद अविराम॥ ४॥

यही कनखल का पावन क्षेत्र
किया था जहाँ दक्ष ने याग।
सती देख न शिव का भाग
क्रुद्ध हो किया देह-परित्याग॥ ५॥

सती-मन्दिर है यहीं समीप
जहाँ शिवदर्शन का आनन्द।
शिवालय शोभा से परिपूर्ण
सभी के लिए खुला सानन्द॥ ६ ॥

शिवालिक पर्वत पर रमणीय
बना मनसा देवी का धाम।
जगज्जननी दुर्गा की मूर्ति
प्रणतजन को देती विश्राम॥ ७॥

यन्त्र से चढ़ कर जाते लोग
समर्चन कर पाते सुख शान्ति।
दिखाई देता पावन दृश्य
मिटे मन की सारी भवभ्रान्ति॥ ८॥

नगर से नाति दूर अभिराम
यहाँ माँ चण्डी-धाम प्रशस्त।
महा लोभी दुर्जन दुर्दान्त
किया है तैमूरलंग ने ध्वस्त॥ ९॥

चण्डिका-मन्दिर था अति भव्य
मूर्ति पर उसने किया प्रहार।
किया यवनों ने आकर भ्रष्ट
हुआ था निर्मम अत्याचार॥ १०॥

राम-श्री कृष्ण-जन्म भू तथा
ज्ञानवापी काशी विख्यात।
विदित है सोमनाथ का घाव
यवन आक्रामक है कुख्यात॥ ११॥

भीमगोड़ा का सुन्दर कुण्ड
भीम-निर्मित रमणीय स्थान।
दिलाता उनके बल का बोध
भीम थे कितने बली महान॥ १२॥

जहाँ सप्तर्षि-धाम कमनीय
बने ऋषियों के आश्रम भव्य।
सात धारायें सुरसरि-धार
यहाँ की शोभा अतिशय नव्य॥ १३॥

यहाँ का शिवमन्दिर विख्यात
और मन्दिर भी हैं अभिराम।
अत्रि-गौतम-जमदग्नि-वसिष्ठ
सकश्यप भरद्वाज-प्रियनाम॥ १४॥

पुण्य परमार्थाश्रम कमनीय
राममन्दिर-दुर्गा बहु देव।
विनिर्मित अगणित मन्दिर रम्य
धन्य सुख देवानन्द सुदेव॥ १५॥

यहीं भारत-मन्दिर विख्यात
आधुनिक शिल्प कला कमनीय।
सत्यमित्रा का दिव्य स्थान
सन्त व्यापक हैं जो महनीय॥ १६॥

दुधारी-आश्रम अतिशय दिव्य
भव्य मीनारों से परिपूर्ण।
दिखाता अपनी कला मनोज्ञ
बजाता अपना घण्टा तूर्ण॥ १७॥

साधुबेला-आश्रम सुखधाम
सुभग शीतोष्ण-नियंत्रित गेह।
दे रहा अतिथिजनों को शान्ति
लुटाता अपना वैभव-स्नेह॥ १८॥

सुसज्जित शान्ति कुंज अतिरम्य
मंजु गायत्री-यन्त्र-स्थान।
कर रहा है अभेद परिपूर्ण
श्रीराम शर्मा का यह संस्थान॥ १९॥

विश्व में इसकी व्यापक ज्योति
भरे भारत-संस्कृति संस्कार।
विविध मन्दिर हैं इसमें भव्य
कला-कौशल-निर्मित आगार॥ २०॥

भव्य प्रांगण मंजुल उद्यान
दुर्ग-से खड़े सुशोभित धाम।
तपस्वी नववय सुगठित-काय
लसित नव अम्बर पीतललाम॥ २१॥

किया करते बहु श्रुति-अनुसार
नित्य-नैमित्तिक-कर्म-विधान।
जहाँ नर-नारी एक समान
प्राप्त करते विद्या का ज्ञान॥ २२॥

विविध शोभा-सौन्दर्य महान
प्राकृतिक वैभव-भरा सुरम्य।
दिव्य देखा मैंने हरिद्वार
प्रवाहित सुरसरि-धार अदम्य॥ २३॥

सौध-पथ-वीथी साधन-पूर्ण
नगर की शोभा अति कमनीय।
लसे विद्युति प्रकाश अति मंजु
कला-विद्यालय से महनीय॥ २४॥

नगर यह अपने में विख्यात
स्वर्ग का द्वार प्रथम सोपान।
यहाँ पर लगता पावन कुंभ
जहाँ पर आते सन्त महान॥ २५॥

॥ हरिद्वार सोपान सम्पन्न॥

ऋषिकेश सोपान

सन्त मुनि-निर्जर गण-शुभ धाम
शिखर की शोभा अति कमनीय।
मनोहर सुरसरि की रस-धार
तीर्थ ऋषियों का यह महनीय॥ १॥

सुशोभित सन्त सेव्य सुखधाम
प्रकृति-परिपूर्ण शिखर के पास।
त्रिवेणी की धारा प्रत्यक्ष
देव सरि-शोभा-छटा-विलास॥ २॥

रम्य मुनि का पावन तप देख
आम्र के एक शाख पर बैठ।
उन्हें हरि ने दे दर्शन दिव्य
किया जाग्रत हिन्मन्दिर-पैठ॥ ३॥

तभी से ऋषियों का स्थान
साधन-स्थल प्रख्यात पवित्र।
चतुर्दिक वन शोभा कमनीय
परम मोहक सुप्राकृतिक चित्र॥ ४॥

यहीं से हुए तपस्या-लीन
भाइयों के समेत श्रीराम।
जहाँ लक्ष्मण झूला विख्यात
लुटाता मोद-कोश अविराम॥ ५॥

भरत का मन्दिर अति प्राचीन
सकुब्जाभ्रक-सुकुण्ड कमनीय।
त्रिवेणी-घाट कला से पूर्ण
सुशोभित रम्य स्थल महनीय॥ ६॥

ललित कैलासाश्रम-गुरुद्वार
बहुत से बने भवन अभिराम।
सुभग स्वर्गाश्रम-छटा अनूप
स-गीता भवन प्रार्थना-धाम॥ ७॥

शिवानन्दाश्रम शोभा-पूर्ण
साधु थे वे विशुद्ध विख्यात।
बहुत से साधक सन्त सुजान
यहाँ अब भी रहते निष्णात॥ ८॥

राम लक्ष्मण-झूला-आनन्द
झूलती प्रकृति-छटा अभिराम।
पर्यटक-साधक भक्त सुजान
यहाँ आकर करते विश्राम॥ ९॥

यहीं से जाते चारों धाम
देखते पावन हिमगिरि-क्षेत्र।
विमल तटिनी-धारा अवलोक
सफल हो जाते दर्शक-नेत्र॥ १०॥

मार्ग अल्मोड़ा से अभिराम
पहुँचता मानसरोवर-पास।
यहाँ आकर जगती के लोग
हृदय में भरते भक्ति-प्रकाश॥ ११॥

हिमालय की गोदी में मंजु
बने हैं कितने दिव्य स्थान।
तिर्युगी नारायण में अग्नि
शिवा-शिव-वैवाहिक पहचान॥ १२॥

जहाँ हैं चार कुण्ड विख्यात
शारदा-ब्रह्म-कुण्ड शिव-कुण्ड।
नाभि से नर नारायण धार
प्रवाहित हो भरता सब कुण्ड॥ १३॥

रम्य गुरु गोविन्दाश्रम तथा
साहिबी स्वर्ण-कुण्ड कमनीय।
चतुर्दिक चमकीले हिमश्रृंग
सरोवर अति विशाल महनीय॥ १४॥

पुष्प की घाटी जग-विख्यात
हिमालय की गोदी अभिराम।
प्रकृति की शोभा-छटा महान
हिमालय अनुपम शोभा-धाम॥ १५॥

जहाँ कैलस-शिखर कमनीय
सुशोभित मानसरोवर रम्य।
पर्यटक-सन्तों का छवि-धाम
साहसी आते यहाँ अदम्य॥ १६॥

इसी गिरि में कश्मीर महान
जहाँ श्री अमरनाथ का धाम।
गुफा में बनती पावन मूर्ति
शंभु गौरी का शोभा धाम॥ १७॥

विपुल हैं पावन सुंदर स्थान
प्रकृति की सुषमा से परिपूर्ण।
गुप्त कितने-कितने प्रत्यक्ष
सभी हैं आकर्षण से पूर्ण॥ १८॥

सघन वन शोभा से परिपूर्ण
यहाँ सब ऋतु पुलकित अभिराम।
दिव्य शैलाधिराज का दृश्य
बना आध्यात्मिक शोभा धाम॥ १९॥

अभी तक वही प्रकृति सौन्दर्य
भर रही महत् चेतना-शक्ति।
पल्लवित कुटज कुसुम कमनीय
विविध विकसित सुमनों की पंक्ति॥ २०॥

महागौरी का प्रादुर्भाव
हुआ हिमगिरि में ही विख्यात।
शिवा ने यहीं ससैन्य निशुम्भ
शुंभ का रण में किया निपात॥ २१॥

यहीं बलिसुत बाणासुर-स्थान
यहीं है परशुराम का वास।
यहीं नचिकेता-पावन भूमि
बालखिल्यों का यहीं निवास॥ २२॥

॥ ऋषिकेश सोपान सम्पन्न॥

यमुनोत्री सोपान

बोले गिरीन्द्र, गाओ कवीन्द्र
रवितनया-चरित पुनीत प्रथम।
क्यों आयी यमुना मेरे गृह?
करने क्रीड़ा अपनी अनुपम॥ १॥

मैं बोल उठा, हे अपरिमेय!
तेरी महिमा का अमर गीत।
गाते हैं अमर सनातन से
तुम नित नवीन अतिशय पुनीत॥ २॥

यह यमुना जम्बू द्वीप रही
जामुन के रस की बन धारा।
तपकर रवि तनया बन आयी
पाने को कृष्ण-चरण प्यारा॥ ३॥

अब तप करती कालिन्दी बन
गिरि की गोदी में बैठ अचल।
बहती अनुरागमयी धारा
कलकल-छलछल लहरा अंचल॥ ४॥

अपने अतीत का नीलापन
गन्धक-तल से हो गन्धमयी।
पा सूर्यदेव से उष्णदान
बहती रविजा कल्याणमयी॥ ५॥

बीहड़ दुर्गम सरिपथ कगार
अनगढ़ वक्री ज्यों चले व्याल।
गिरि भीष्म खड़ा है एक ओर
दूसरी ओर गह्वर विशाल॥ ६ ॥

सौन्दर्य-छटामृत एक ओर
झाँकती मृत्यु दूसरी ओर।
शोभा विलोकते पथिक-वृन्द
पकड़े निर्भयता-वसन-छोर॥ ७ ॥

चलता नारी समूह लेकर
धानों के गट्ठर तीन-तीन।
हैं चरा रहे गोपाल-वृन्द
गायों-मेषों को सुना बीन॥ ८ ॥

यह पशुचारण का सरस क्षेत्र
अनुपम खेती घाटी मनहर।
कालिन्दी बहती अति पावन
नीलम-मोती अंचल में भर॥ ९ ॥

कालिन्दी-तट पर महासघन
बनकी शोभा लगती प्यारी।
औषधियों का भण्डार प्रचुर
धानों की शोभा अति न्यारी॥ १० ॥

बन्धुर पथ दुर्गम अति विशाल
पर्वत की घाटी कठिन काट।
बहती यमुना रस-धारा है
हिमगिरि से रचती नयी बाट॥ ११ ॥

यमुनोत्री जाते कितने जन
हनुमत् चट्टी से अश्वों पर।
पैदल भी यात्री जाते हैं
ले श्रद्धा निज विश्वास अमर॥ १२॥

पहले था कितना मार्ग कठिन
अब भी भीषण है पक्का पथ।
इसमें विकास आवश्यक है
पहुँचे निर्भय यह मानव-रथ॥ १३॥

यमुनोत्री की धारा गिरती
हिम उच्च शिखर से अति पावन।
यमुना-प्रपात की शोभा लख
विह्वल आनन्दित मनभावन॥ १४॥

है तप्त कुण्ड-जल एक ओर
गिरि ओर शीत की नव धारा।
यमुनोत्री की उद्‌गम-महिमा
सुन-सुन धुल जाता है अघ सारा॥ १५॥

इसलिए यहाँ आती जनता
ले श्रद्धा का विश्वास अचल।
हम नरक-द्वार से मुक्त हुए
यम से निर्भय होकर विह्वल॥ १६॥

गिरिवर कलिन्द से जायमान
जो है हिमगिरि का दिव्य शिखर।
जिसमें नीलाभा रमती है
बहती यमुना की धार प्रखर॥ १७॥

मंजुल पुलिनों पर नन्दन वन
मोहक बन कर लहराता है।
घाटी की शोभा का सुदृश्य
प्राणों को अतिशय भाता है॥ १८॥

अवगाहन करते तप्त कुण्ड
यमुनोत्री का करते दर्शन।
जानकी-कुण्ड, हनुमत्-चट्टी
लख आगे बढ़ा प्रफुल्लित मन॥ १९।

अपने वाहन पर थे सवार
चलती थी पथ में जीप सहज।
थे कुशल सारथी तरुण सरल
बैठे थे और मित्र सज-सज॥ २०॥

देखते चले पर्वत-शोभा
अतिशय अकथ्य अनुपम अपार।
सत् चित् प्रहर्ष जीवन का रस
प्रियतम सीता राघवाकार॥ २१॥

अमरत्व बिछा पर्वत-घाटी
सौन्दर्य खोलता निज लोचन।
गिरि नव्य चेतना का विकास
करता आनन्दित दुख-मोचन॥ २२॥

चैतन्य शुभ्र निर्झर पावन
आनन्द-प्रीति-सौन्दर्य-शिखर।
जीवन-प्रेमी यह अति विराट
भरता उरमें शुभ भाव अमर॥ २३॥

सोल्लास प्रकृति सँवरी पग-पग
मृग-मस्त केलि खग कुल-कलरव।
मधुकर-गुंजित कल वन-माला
क्या सम्मोहक गिरिवर-वैभव॥ २४॥

आते हैं कितने नर-नारी
लेकर श्रद्धा दर्शन करने।
जाते हैं लेकर अमिट छाप
छवि छटा-मुग्ध-तनमन अपने॥ २५॥

भू-शोभा का सौन्दर्य-वाह
इस वसुन्धरा का नव यौवन।
मुकुलित छाया बहुरंग दीप्ति
ज्यों देवों का नन्दन कानन॥ २६॥

पथ में वर्च्च सघन छाया
छायी थी वन की हरियाली।
सीढ़ी-मय धानों की खेती
पीताभ-भरी स्वर्णिम थाली॥ २७॥

गाता सौन्दर्य शिराओं में
बंकिम सड़कों का वर विलास।
देखो! आगे सरि-मधुबाला
भरती जनमन में महोल्लास॥ २८॥

पुष्पित सुघाटियों की शोभा
भगवद्-वैभव से भरे शिखर।
थे विविध प्रसूनों से आवृत्त
शोभा-मंगल-अनुपम भूधर॥ २९॥

मधुगन्ध-मरन्दों से विकसित
रति प्रकृति स्वत: नव आलिंगन।
बैठे हैं विहंग तरुण सुन्दर
लतिकायें करतीं मधुचुम्बन ॥ ३० ॥

करते आकर्षित हरे शिखर
मन ध्यान मौन करता विचरण।
विस्मय अवाक् हो जाता जन
अवलोक शैल-शोभा-वितरण ॥ ३१ ॥

उपवन में होता है, अलक्ष्य
रस-पूत प्रीति-आत्मा दर्शन।
जीवन-रचना, तपका साधन
देखा अपलक गिरिवर शोभन ॥ ३२ ॥

हिमगिरि से आया एक नाद!
हे भारतवासी! सजग रहो!!
तत्पर स्वदेश की रक्षा-हित
संगठित भेद से विलग रहो! ॥ ३३ ॥

तुम मेरी रक्षा करना नित
मैं प्रहरी सतत तुम्हारा हूँ।
यह भारत-संस्कृति अमर रहे
मैं उसकी शाश्वत धारा हूँ ॥ ३४ ॥

॥ यमुनोत्री सोपान सम्पन्न ॥

केदारनाथ सोपान

लिये मन में श्रद्धा-विश्वास
चले केदारनाथ की ओर।
पार कर एक सुरंग विशाल
गहन बन माला चारों ओर॥ १॥

मंजुतम मन्दाकिनी-प्रवाह
दिव्य धारा पर्वत के बीच।
देखते कुंभज-गुहा पुनीत
किया अवगाहन सलिल उलीच॥ २॥

लहरते सालि-क्षेत्र थे ललित
हरित सोपान छटा कमनीय।
नील मणिमय दुकूल अभिराम
कलित कान्तार परम रमणीय॥ ३॥

हुई अव्यक्त प्रकृति बन व्यक्त
स्फटिक मय शिखर हरित अभिराम।
सतत् नीहारावृत कमनीय
मनोहर मंजुल शोभाधाम॥ ४॥

मेरु-तटवर्ती बंकिम मार्ग
चल रहे थे जिस पर कुछ यान।
भयानक गर्त, शिखर गंभीर
भर रहा मन में भय सुखभान॥ ५॥

घाटियों की शोभा अतिदिव्य
देखता हिमपथ-रव संचार।
शिशिर-हेमन्त-शरद ऋतु सतत्
सम्मिश्रण से करती नित प्यार॥ ६॥

हिमालय का अद्‌भुत शृंगार
कर रहीं ऋतुएँ जैसे नाच।
बह रही मन्दाकिनी मनोज्ञ
शिखर-द्रोणी में रही कुलाँच॥ ७॥

लिये मन में आध्यात्मिक भाव
देखता कुसुमित कानन रूप।
छटा नीली-पीली-हरिताभ
विविध रंगों के सुमन अनूप॥ ८॥

पुष्प-घाटी की मखमल-माल
वाष्प-परिधान-लसित मृदु श्याम।
हरित-सित-अरुणिम-रंगविरंग
लखा निर्झर-संयुत अभिराम॥ ९॥

तितलियों का कमनीय विलास
विहग-कलरव सुख शोभा धाम।
हिमाच्छादित थे शिखर सुदूर
दे रहे नयनों को विश्राम॥ १०॥

चढ़ाई आठ मील की भव्य
पार कर पहुँचा मन्दिर-पास।
पथिक थे कितने भाव विभोर
ले रहे कठिनाई से श्वास॥ ११॥

देख मन्दिर की शोभा भव्य
हृदय से करते सभी प्रणाम।
जयति केदारनाथ जगदीश
परम पावन है प्रभु का धाम॥ १२॥

कृष्ण का आया मन में ध्यान
पाण्डवों का पावन प्रस्थान।
यहीं पर हुए सकल निष्पाप
प्राप्त कर शंकर से वरदान॥ १३॥

महिष का पृष्ठभाग शिवमूर्ति
बना केदारनाथ शिवलिंग।
मुखाकृति पशुपति प्रभु नैपाल
शंभु के द्वादश ज्योतिर्लिंग॥ १४॥

यहीं पर हंस कुण्ड कमनीय
जहाँ पितरों का श्राद्ध-विधान।
यहीं पर अमृत-कुण्ड अति पूत
तथा शुचि रेतस-कुण्ड महान॥ १५॥

यहीं बर्फीली जल की झील
निकलता मन्दाकिनी-प्रवाह।
परम अद्भुत हिमगिरि का प्रान्त
सकल संसृति-शोभा-संवाह॥ १६॥

भीम ने किया यहीं अभिषेक
सजी मुक्ताओं से शिवशक्ति।
महापथ देखा अति कमनीय
जहाँ चढ़ मिलती जीवन मुक्ति॥ १७॥

यहीं है माहेश्वर संस्थान
शिवाशिव की शय्या विस्तीर्ण।
खिले श्रावण में अम्बुज दिव्य
लसी जिन पर रवि-प्रभा विकीर्ण॥ १८

तभी से सुप्रसिद्ध अद्यापि
विनिर्मित विग्रह यहाँ अनेक।
हुए केदारनाथ जग-वन्द्य
आज भी होता है अभिषेक॥ १९॥

तुम्हें है बारंबार प्रणाम
देव केदारनाथ-नखकान्ति।
दिव्य उत्तुंग शिखर-आरूढ़
हरण करती भीषण भव-भ्रान्ति॥ २०॥

प्रकृति है स्वयं पार्वती-रूप
दिखाती अपनी शक्ति महान।
अविद्या-विद्या से परिपूर्ण
तिरोहित, समुदय करती ज्ञान॥ २१॥

शिवा कल्याणी-पदनख ज्योति
हृदय में भरदे अविरल भक्ति।
समुद सत्पथ पर रहूँ सदैव
अचल दे माँ! मुझ में वह शक्ति॥ २२।

॥ केदारनाथ सोपान सम्पन्न॥

बदरीनाथ सोपान

सभी हरिकीर्तन-निरत समोद
चले बद्रीविशाल की ओर।
दृश्य अवलोकन करते भव्य
मित्र-मण्डल-युत भाव विभोर॥ १॥

अलकनन्दा-सुरसरिता मंजु-
सम्मिलित पावन देव प्रयाग।
पहुँचकर देखा अतिशय भव्य
हृदय में उमड़ पड़ा अनुराग॥ २॥

बृहत् श्री रामजानकी-मूर्ति
धर्मशाला कमली का भव्य।
किया संगम-हरिकुण्ड-स्नान
जहाँ की प्रकृति मनोरम नव्य॥ ३॥

दिखाता तुंगनाथ से दृश्य
नीलकण्ठाद्रि महाकमनीय।
शिखर नन्दा देवी का भव्य
और पर्वतमाला महनीय॥ ४॥

शिवालय गोपेश्वर का मंजु
जहाँ खण्डित मूर्तियाँ पवित्र।
मिला वह रुद्रप्रयाग पुनीत
गरुड़-गंगा-थल परम पवित्र॥ ५॥

देख जोशीमठ का विस्तार
शंकराचार्य पीठ शुचि भव्य।
हस्ति कुण्डों से सलिल प्रवाह
प्रकृति शोभा अतिशय द्रष्टव्य॥ ६ ।

यहाँ बद्री विशाल षट्मास
शरद में पाते पूजा-भोग।
यहाँ का नगर परम रमणीय
साधते जहाँ योगिजन योग॥ ७॥

यात्रियों को सुख-सुविधा प्राप्त
धर्मशाला विश्राम-स्थान।
बड़ा गुरुद्वारा-विद्याकेन्द्र
शासनिक कार्यालय-संस्थान॥ ८॥

सुशोभित लगते अतिशय श्रृंग
रजत-गिरि शोभित अति अभिराम।
देखते प्रकृति सुन्दरी दृश्य
मिल रहा नयनों को विश्राम॥ ९॥

× × ×

देखते प्रकृति की दिव्य छटा
वाहन समेत सब पहुँच गये।
श्री नर नारायण शिखर-मध्य
जिसको विलोक हम चकित हुए॥ १०

''हैं खड़े चतुर्दिक'' हिमपर्वत
जिन पर वृक्षों का नाम नहीं।
हिम गलित मौलि से गंगाधर
ज्यों खड़े दिगम्बर स्वयं यहीं॥ ११॥

है सौम्य अलकनन्दा-प्रवाह
करती आन्दोलित कलरव से।
मन्दिर-समक्ष है भव्य सेतु
देने को मुक्ति महाभव से॥ १२॥

उपनगर मनोरम लसित रम्य
बद्री विशाल का पावन थल।
शुचि ब्रह्मकपाल-प्रतप्तकुण्ड
महिमा-मण्डित अति निर्मल जल॥ १३॥

जिसमें मज्जन करके प्रमुदित
दे पिण्ड दान निज पितरों को।
जा मन्दिर में दर्शन-निमित्त
देखा अद्भुत शोभाधर को॥ १४॥

प्रभु बैठे हैं, पद्मासन में
बहु दिव्याभरणों से शोभित।
अनुपम हीरक-अवतंस-लसित
शोभा विलोक था मन लोभित॥ १५॥

नर नारायण-उद्धव-कुबेर
देवर्षि खड़े वीणा लेकर।
हनुमान्-गणेश-महालक्ष्मी
बाहर परिक्रमा में सुन्दर॥ १६॥

इस थल पर आनन्दित होकर
हम सभी यहाँ दो दिवस रहे।
सीमा का अन्तिम ग्राम दिखा
सैनिक जिस स्थल पर खड़े रहे॥ १७॥

जाते हैं वायुयान उन तक
साधन-सुविधा-सुख देने को।
दिव्यास्त्र-शक्ति से सजे हुए
सीमा संरक्षा करने को॥ १८॥

सैनिक अति शीत सहन करके
बैरी से करते हैं रक्षण।
इनका अभिनन्दन करता हूँ
जिनसे भारत-रक्षा अनुरक्षण॥ १९॥

वे वीरव्रती हैं राष्ट्र-भक्त
तापस-साधक-से योगनिरत।
अर्पित करके जीवन समग्र
संरक्षण-रत संसार-विरत॥ २०॥

हम सोते किन्तु जागते ये
निःशंक दुन्दुभी वादन कर।
करते सामना बैरियों का
बाधाओं के शिर पर डट कर॥ २१॥

यहीं सरपंच-शिला का स्थान
शिला नारद की अति सुपुनीत।
यहीं वाराह शिला का खण्ड
बताता अपना समय अतीत॥ २२॥

शुभ्र शिला मारकण्डेय नृसिंह
दिव्य वसुधारा अति कमनीय।
न गिरती लेश अघी पर बुन्द
धन्य हैं यह प्रपात महनीय॥ २३॥

शिलायें शेष नेत्र सुविचित्र
पास में चरण पादुका-स्थान।
जहाँ पुष्पों की छटा मनोज्ञ
हिमालय का मोहक वरदान॥ २४॥

सरोवर शत सुपंथ कमनीय
बड़े ऊँचे थलपर विस्तार।
पास में अलकापुरी पवित्र
अलकनन्दा का पावन द्वार॥ २५॥

सन्निकट माना ग्राम पुनीत
यहीं केशव-प्रयाग कमनीय।
सलोना सरस्वती-शुचि कूल
जहाँ पर व्यास-गुफा महनीय॥ २६॥

परम पावन हरि-हर का धाम
तपस्थल यह अनादि कालीन।
यहीं पर नर-नारायण देव
तपस्या में रत हैं आसीन॥ २७॥

यहाँ की स्वर्गिक छटा पवित्र
हिमालय की गोदी अभिराम।
यहीं नारद-उद्धव-सनकादि
विपुल ऋषि तपरत हैं अविराम॥ २८॥

यहीं है बद्रीवन विख्यात
पूर्व था बदरी-वन विस्तार।
किन्तु अब पर्वत वे निर्वृक्ष
दिगम्बर डटे दिग्गजाकार॥ २९॥

आप्त जन्मान्त-पुण्य-परिपाक
मात्र अधिकारी सन्त सुजान।
जहाँ आते तपहित सविवेक
ग्रन्थ गाते अद्‌भुत आख्यान ॥ ३० ॥

तुम्हें है बारंबार प्रणाम
ललित नयनाभिराम हरिधाम।
जयति बद्रीविशाल भगवान
व्यथित को देते जो विश्राम ॥ ३१ ॥

॥ बद्रीनाथ सोपान सम्पन्न ॥

गंगोत्री सोपान

देखते महीधर शोभा
गंगोत्री ओर बढ़ा दल।
उत्तरकाशी के आगे
सुरसरि की धारा निर्मल॥ १॥

गंगा की धारा में मन
धारा का करते चिन्तन।
धारा-धारा रस धारा
ब्रह्मद्रव-रस-आस्वादन॥ २॥

कुछ आगे बढ़ कर देखा
गंगा में बाँध बना कर।
विद्युत-उत्पादन होता
विकसित हैं जिससे घर-घर॥ ३॥

दैहिक-दैविक-आध्यात्मिक
हरता त्रिताप गंगा-जल।
कर रहे प्रदूषित जल को
स्वार्थान्ध मनुजगण प्रतिपल॥ ४॥

पर गंगा-जल क्या बोले?
धरणी-पर्वत क्या बोलें।
इनमें तो सहज क्षमा है
मानव रसमें विष घोले॥ ५॥

भूपाल भगीरथ ने था
तप से सुरसरित बुलाया।
सादर निज जटा-भँवर में
शंकर ने सहज लुभाया॥ ६॥

फिर गंगा जह्नु-सुता बन
बढ़ती समोद सगर तक।
वह दग्ध कपिल मुनिवर से
तारने समर-सुत-पातक॥ ७॥

वह गंगा-उद्‌गम देखूँ
मनमें श्रद्धा ले पावन।
बढ़ता था हिमगिरि पथ में
देखते दृश्य मनभावन॥ ८॥

सुक्खी झाला गगनानी
भटवड़ि मनेरि हरसिलसे।
देखते अद्रि-शोभा था
प्रमुदित सुरसरित-सलिल से॥ ९॥

कितना दुर्गम पथ बीहड़
दुर्गम घाटी में हँसती।
सुरसरि कलकल कलरव से
आनन्द-धार थी बहती॥ १०॥

फहराते केतन उज्ज्वल
गिरिवर सुप्रभ गालों पर।
कुन्तल घन घाटी सोये
ऊँचे पर्वत-ढालों पर॥ ११॥

छायाभा-शोभा-गुण्ठित
गिरि स्वर्ग-पीठ मन हरते।
झरते मुक्ताफल निर्झर
शिखरों के दर्शन करते॥ १२॥

इन मंजु शुभ्र शिखरों में
अर्पित प्रभु का चरणामृत।
ब्रह्मा ने दिया धरा पर
शिव भाल सुशोभित आदृत॥ १३॥

इस महाशक्ति को पाने
कर गये तपस्या कितने।
ऋषियों ने गंगा के हित
देखे अनुभव के सपने॥ १४॥

[illegible] यहाँ तक आये
करते श्री गंगा दर्शन।
अवलोक मंजु दृश्यावली
होता न मग्न किसका मन?॥ १५॥

शुचि शीतल गंगाजल में
मज्जन यात्री सब करते।
पावन जल रामेश्वर-हित
अपने पात्रों में भरते॥ १६॥

गंगा मन्दिर में आकर
गंगा का दर्शन करते।
भगवान भगीरथ-दर्शन
करके मन में सुख भरते॥

ब्रह्मद्रव निर्जर-सरिका
पीते सश्रद्ध जो नर वर।
आनन्द ब्रह्म में मिलते
पूर्णतः मुक्ति को पाकर॥ १८॥

गंगा है जगकी माता
गंगा है मुक्ति प्रदात्री।
गंगा भारत की महिमा
गंगा है जीवन-दात्री॥ १९॥

गंगोत्री से अब आगे
गोमुख की छटा निराली।
वह गौरी कुण्ड सुशोभित
वन-पर्वत शोभाशाली॥ २०॥

वह देव घाट बीहड़ पथ
कर पार चले गोमुख तक।
देखते अद्रि-वन-शोभा
चढ़ते-चढ़ते जाते थक॥ २१॥

पर दृश्य लुभाता मन को
सुरधुनि-शुचिजल पीड़ाहर।
गोमुख तक भक्त पधारे
सुनते गंगा-ध्वनि हर हर॥ २२॥

गिरती है उच्च शिखर से
गोमुख से पावन धारा।
दर्शन कर मुक्त पथिक हो
बनता गंगा का प्यारा॥ २३॥

बलि यज्ञसभा में नाका
हरि ने जब चरण बढ़ाया
जब ब्रह्मलोक तक पहुँचा
पदनख विधि ने धो पाया॥ २४॥

हरिपदनख से रस निकला
वह ब्रह्मद्रव कहलाया।
वह स्वयं कमण्डलु में रख
ब्रह्मा ने अति सुख पाया॥ २५॥

इस गंगा जल को पाने
इक्ष्वाकुवंश के नृपगण।
थे हुए तपस्या में रत
लाने को था उनका प्रण॥ २६॥

वे साठ हजार सगर-सुत
जो कपिल दृष्टि से दाहित।
उनको है मुक्ति दिलाना
कर जल में अस्थि प्रवाहित॥ २७॥

वसुधा-सुहाग बन आयी
बन गयी त्रिपथगा सुरसरि।
तीनों लोकों का हित कर
महिमा भरने सुर हरि-हर॥ २८॥

निम्नगा सभी सुर सरिता
पर मूल जाह्नवी-धारा।
जो हरि-चरणामृत द्रव है
जिनसे अघ मिटता सारा॥ २९॥

माँ गंगा का अभिनन्दन
करते हैं सुर-मुनि सादर।
वह धर्म रूप में बहती
भजते जिसको आराधक॥ ३० ॥

करता शत बार देव धुनि—
धारा का मैं अभिनन्दन।
भूपाल भगीरथ-श्रम का
करता सश्रद्ध हूँ वन्दन॥ ३१ ॥

भारत की संस्कृति पावन
गंगा बन करके आयी।
वह गंगा पूज्य हमारी
जिसमें त्रयशक्ति समायी॥ ३२ ॥

गंगा-भक्तों का वन्दन
है बारंबार हृदय से।
हे कल्मष-नाशिनि गंगे!
पाते सब तुम्हें विनय से॥ ३३ ॥

॥ गंगोत्री सोपान सम्पन्न ॥

मानसरोवर सोपान

हिमगिरि बोला चढ़कर देखो!
मेरे उर का यह मानस-सर।
जगको आमंत्रित करता हूँ
देखो मेरा कैलास-शिखर!! १ ॥

मरकत छाया गिरि-प्रांगण में
भगवत् रस के प्रिय अभिलाषी।
मानस को नव-जीवन देने
आओ कवि साधक संन्यासी ॥ २ ॥

गिरि-सोपानों पर उतर विचर
अनुभव कर लो आकर गिरि में।
है मेरा अन्तर्ज्योति शिखर
आनन्द रूप उज्ज्वल सरि में ॥ ३ ॥

पाकर गिरीश्वर का आमंत्रण
आते हैं कितने साधक जन।
पर्यटक प्रकृति के प्रेमीजन
देखने नवल निर्झर गिरि-वन ॥ ४ ॥

हिम शृंगों की शोभा सुन्दर
जिसमें घन लिपटे बंकिम वन।
शिखरों पर बनकर मोर-मुकुट
आकर्षित करते श्यामल घन ॥ ५ ॥

शिखरों की शोभा अनुपम कर
कुन्तल घन घाटी में बसते।
दुहरे-तिहरे बन इन्द्र धनुष
हिमगिरि में नव शोभा भरते॥ ६॥

पर्वत प्रदेश की प्रिय राका
शशि-किरणें शिखरों पर शोभित।
आता प्रभात सौन्दर्य लिये
खग-कलरव से करता मोहित॥ ७॥

हिम गिरि ऋतुओं का शोभाशय
हँसती मखमल की तलहटियाँ।
सुर धनु-शिखरों का सम्मोहन
मणि-झार-लसित मृदु पंखुड़ियाँ॥ ८॥

नीली-पीली पुष्पित घाटी
सित-हरित-अरुण-रंगोवाली।
मरकत सोपानों से विरचित
हँसती उपत्यका-हरियाली॥ ९॥

बन्धुरपथ-दुर्गमपथ चढ़ते
हिमगिरि का देख सघन कान्तर।
वे बौद्ध तिब्बती-हिन्दूजन
पूजा करते कैलास-शिखर॥ १०॥

यह मानसरोवर ब्रह्मा ने
अपने कर से सुन्दर रच कर।
हिमगिरि को नव उपहार दिया
जन-नयनाकर्षक यह गिरिवर॥ ११॥

यह मानसरोवर सिद्धस्थल
कल हंसों का आवास रम्य।
जो सती हस्त का करतल है
सम्राट सरों का अचल सौम्य॥ १२॥

मुक्ता चूँगते मराल मंजु
उड़ते हैं ऊर्ध्व गगन जाकर।
शुचि मान सरोवर की शोभा
दीपित करती कैलास-शिखर॥ १३॥

जिसमें विमुग्ध हो निर्निमेष
सुध-बुध खोते आगन्तुक जन।
सौन्दर्य राशि सारे जग की
क्रय करती तत्क्षण मानव-मन॥ १४॥

देखते न होते तृप्त नेत्र
विधि की रचना अद्भुत भूपर।
अवतंस हिमालय भारत का
शिव पार्वती का पावन घर॥ १५॥

षड्दल कमलों-सी गिरिशोभा
मध्यस्थ शिखर कैलास खड़ा।
यह भव्य शिवालय-सा लगता
शिखरों का यह सम्राट बड़ा॥ १६॥

करते परिक्रमा इस गिरि को
साष्टांग प्रणत हो साधकजन।
इसका सौन्दर्य विलक्षण है
वैराग्य-राग का भव्य भवन॥ १७॥

सुर-किन्नर सुन्दर वाद्य युक्त
करते हैं इसका अभिनन्दन।
वारिद करते हैं यशोगान
घिर-घिर मृदु गर्जन रस-वर्षण॥ १८॥

सर्वदा प्रदूषण रहित रहे
यह महामहिमशाली भारत।
हे वन्दन बारंबार विभो!
जन-जीवन हो शुचि कर्म-निरत॥ १९॥

॥ मानसरोवर सोपान सम्पन्न॥

संपूर्णमिदं स्वर्गायतनम्
श्री रामार्पणमस्तु

विजया दशमी
सं० २०५४ विक्रम